Dr. Vinod Baitha
Deptt of Economics
Marwari college Darbhanga

Economics

D. II Subsidiary

Lecture-16

केन्द्रीय बैंक तथा उसके कार्य

Central Bank and its Funcation

प्रत्येक देश में मौद्रिक तथा बैंकिंग व्यवस्था के शिखर (Apex) बैंक को केन्द्रीय बैंक कहते हैं। केन्द्रीय बैंक भारत सरकार के स्वामित्व तथा नियंत्रण में होता है। यह बैंक देश की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए मौद्रिक नीति का निर्माण करता है तथा उसे क्रियान्वित कराने के लिए दूसरे बैंकों को निर्देश देता है। केन्द्रीय बैंक को देश के पत्र मुद्रा के निर्गमन का अधिकार होता है यह साख नियंत्रण के लिए परिमाणात्मक एवं गुणात्मक विधियों का प्रयोग करता है। यह बैंक दूसरे बैंकों का बैंक, बैंकों के क्रिया कलाप को निर्देशित तथा नियमित करता है। बैंकों में व्यवसायिक बैंकों का उद्देश्य लाभ अर्जित करना होता है लेकिन केन्द्रीय बैंक लाभ कमाने के उद्देश्य से कार्य नहीं करता बल्कि इसका कार्य कल्याण करना है। रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया भारत का केन्द्रीय बैंक है। भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना 1935 ई० में एक निजी बैंक के रूप में की गयी थी। 1 जनवरी 1949 को इसका राष्ट्रीय करण किया गया। यह बैंक देश की मौद्रिक तथा वित्तीय व्यवस्था के संगठन, संचालन, नियमन, निरीक्षण तथा विकास का कार्य करता है। केन्द्रीय बैंक देश के सभी व्यवसायिक बैंकों के कार्यों का संचालन एवं निरीक्षण भी करता है।

इस तरह केन्द्रीय बैंक देश की मौद्रिक तथा बैंकिंग व्यवस्था के शीर्ष स्थान पर होता है तथा उसका नेतृत्व करता है। इस प्रकार केन्द्रीय बैंक के कार्य निम्नलिखित हैं

1. नोट-निर्गमन का एकाधिकार – देश में नोट जारी करने का अधिकार, एकाधिकार केन्द्रीय बैंक का होता है। केन्द्रीय बैंक देश की आवश्यकताओं तथा स्वामित्व को ध्यान में रखते हुए नोट जारी करता है तथा मुद्रा की पूर्ति को नियंत्रित करता है। केन्द्रीय बैंक की स्थापना के पहले अनेक बैंकों द्वारा पत्र मुद्रा जारी किया जाता था जिसमें एकरूपता नहीं रहती थी। मुद्रा स्फीति की समस्या उत्पन्न हो जाती थी। केन्द्रीय बैंक नोट-निर्गमन के द्वारा मुद्रा स्फीति एवं मुद्रा की पूर्ति को नियंत्रित करता है। केन्द्रीय बैंक सिक्कों एवं एक रुपये के नोट को छोड़कर अन्य सभी नोटों का निर्गमन करता है।

2. सरकार का बैंक, एजेन्ट तथा सलाहकार — केन्द्रीय बैंक सरकार के बैंक, एजेन्ट तथा परामर्शदाता का कार्य करता है। सरकार की पूरी आमदनी केन्द्रीय बैंक के पास जमा रहती है तथा आवश्यकता पड़ने पर सरकार उसे ऋण लेती है। केन्द्रीय बैंक सरकार के उन सारे कार्यों का सम्पादन करता है जो व्यवसायिक बैंक अपने ग्राहकों के लिए करता है वहीं काम केन्द्रीय बैंक सरकार के लिए करता है। सरकार के लिए ऋण का हिसाब-किताब उसपर सूद-भुगतान जैसे कार्यों का सम्पादन केन्द्रीय बैंक करता है। देश की परिस्थितियों को देखते हुए केन्द्रीय बैंक सरकार के मौद्रिक नीति के निर्माण तथा वित्तीय मामलों में परामर्श भी प्रदान करता है। सरकारी प्रतिभूतियों की खरीद-बिक्री तथा विदेशी मुद्रा का क्रय विक्रय केन्द्रीय बैंक करता है। बैंक सरकार को आवश्यक सलाह भी देता है।

3. बैंकों के बैंक का कार्य — केन्द्रीय बैंक देश के सभी बैंकों का बैंक होता है आवश्यकता पड़ने पर केन्द्रीय बैंक अन्य बैंकों ऋण भी देता है उनकी जमा का एक निश्चित अनुपात केन्द्रीय बैंक के पास जमा रहता है। व्यवसायिक बैंकों के विनिमय बिलों को पुनः बट्टा काट कर भुगतान देता है। संकट की स्थिति में केन्द्रीय बैंक ही बैंकों को ऋण प्रदान करता है उन्हें संकट से उबारता है। इसलिए केन्द्रीय बैंक को अंतिम ऋणदाता या आश्रय दाता कहा जाता है। केन्द्रीय बैंक बैंकों की मुद्रा को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने की सुविधा देता है। इसके अतिरिक्त यह बैंकों के लिए समाशोधन गृह का कार्य करता है।

4. देश के धातु कोष तथा विदेशी विनिमय कोष को सुरक्षित रखना — केन्द्रीय बैंक देश के सोने-चाँदी के भंडार एवं विदेशी विनिमय कोष को सुरक्षित रखता है। पत्र मुद्रा निर्गमन के लिए सोने-चाँदी का कोष रखना पड़ता है। जिसका संरक्षण केन्द्रीय बैंक करता है धातु कोष को रखने की आवश्यकता कई कार्यों के लिए होता है जैसे विनिमय दर में स्थायित्व बनाए रखने के लिए, नोट जारी करने के लिए, विदेशी भुगतान करने तथा देश की मौद्रिक व्यवस्था को अधिक विश्वसनीय तथा मजबूत बनाने के लिए।

5. साख नियंत्रण का कार्य — देश में स्थायित्व के साथ विकास के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए केन्द्रीय बैंक देश के अंदर कुल साख की मात्रा तथा गुण को नियंत्रित करता है देश में मुद्रा स्फीति या मुद्रा संकुचन की स्थिति उत्पन्न न हो इसको ध्यान में रख कर साख नियंत्रण के विभिन्न तरीकों का प्रयोग केन्द्रीय बैंक द्वारा किया जाता है।

साख नियंत्रण के लिए केन्द्रीय बैंक निम्नलिखित विधियों का प्रयोग करता है।

(i) बैंक दर नीति न्यूनतम ब्याज दर होती है जिसपर केन्द्रीय बैंक अन्य बैंकों को ऋण देता है बैंक दर में वृद्धि करने से देने से व्यवसायिक या अन्य बैंकों के साख निर्माण तथा ऋण देने की क्षमता घटती है।

(ii) खुले बाजार की नीति।

(iii) बैंकों के नगद कोष अनुपात में परिवर्तन।

(iv) मार्जिन आवश्यकता में परिवर्तन
V नैतिक दबाव (vi) प्रचार, (vii) प्रत्यक्ष कार्यवाही (viii) साख का राशनिंग
(ix) उपभोक्ता साख पर नियंत्रण आदि प्रयोग मुख्य रूप से करता है।

6. आर्थिक सूचनाएँ तथा आँकड़े एकत्र करना — केन्द्रीय बैंक विभिन्न प्रकार की आर्थिक सूचनाओं तथा आँकड़ों को एकत्र करता है तथा उसका प्रकाशन भी करता है ये आँकड़े हमें देश की आय, उत्पादन, विदेशी विनिमय, बैंकिंग तथा मूल्य संबंधी जानकारी प्रदान करते हैं। राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय सूचनाएँ भी केन्द्रीय बैंक अपनी पत्रिकाओं तथा बुलेटिन छापता है। यह देश के उद्योगपतियों व्यवसायियों के साथ-साथ अर्थशास्त्रियों शिक्षकों तथा छात्रों के लिए लाभदायक होता है।

इन सभी कार्यों के अतिरिक्त केन्द्रीय बैंक देश में उचित मौद्रिक नीति के निर्माण तथा उसके सफल कार्यान्वयन का प्रयास करता है। देश में मूल्य स्थापित बना रहे तथा विनिमय दर में स्थिरता कायम रहे। इसके लिए भी केन्द्रीय बैंक सचेष्ट रहता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि केन्द्रीय बैंक अनेक महत्वपूर्ण कार्यों का सम्पादन करता है देश का आर्थिक विकास स्थायित्व के साथ हो उसके लिए उचित मौद्रिक नीति एवं साख नियंत्रण विधियों का प्रयोग किया जाता है भारतीय रिजर्व बैंक जो भारत का केन्द्रीय बैंक है सभी कार्यों का सम्पादन देशहित में करता है ताकि स्थायित्व के साथ आर्थिक विकास की नीति सफल हो सके।